Madhepura College Madhepura

Dept. of Education

BNMU, Madhepura

कला का वर्गीकरण

- विभिन्न प्रकार की सामग्रियों, माध्यमों और तकनीकों के द्वारा मुख्य रूप से अपने विचारों, संवेगों और भावनाओं की कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता के साथ आत्म अभिव्यक्ति का साधन कला है| कला शिक्षा से शिक्षार्थियों को संवेदनशील बनाता है |इस माध्यम से वे प्रकृति के में ध्वनियों, गतियों, रूपो तथा रेखाओं और रंगों के सौंदर्य की सराहना करना सीखते हैं|

- पाश्चात्य परम्परा में कला को पांच भागों में बांटा गया है----

1. वास्तु कला
2. मूर्तिकला
3. चित्रकला
4. संगीत कला
5. काव्य कला

- .शिक्षा शास्त्री प्लेटो के अनुसार –"कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है|"
- अरस्तु के अनुसार –-"कला प्रकृति के सौंदर्यमय अनुभवों का अनुकरण है |"
- मनोवैज्ञानिक फ्राइड के अनुसार –"दमित वासनाओं का उभरा हुआ रूप ही कला है |"
- **कलाएँ(ARTS)**

दृश्य कलाएँ	प्रदर्शनकारी कलाएँ
1 चित्रकला	1 काव्य कला
2. मूर्तिकला	2 संगीत कला
3 वास्तुकला	

दृश्य कलाएँ----

- **- चित्रकला** – समस्त शिल्पों और कलाओं में प्रधान तथा सर्वप्रिय चित्रकला को माना गया है| चित्रकला भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक भावना तथा सत्यम, शिवम और सुंदरम की समन्वित रूप की अभिव्यक्ति है | सामान्य रूप से तीन प्रकार के चित्र बनते थे- भित्ति-चित्र, पट- चित्र और फलक – चित्र|

- **- मूर्तिकला-** भारत में मूर्तिकला को अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता है| प्राचीन भारतीय मंदिरों की मूर्तिकला पर आजसंपूर्ण विश्व आश्चर्य करता है | मंदिरों में मूर्तिकला का अत्यंत उदात्त रूप देखने को मिलता है प्|राचीन समय में मूर्ति निर्माण में धार्मिक भावना और आस्था का बाहुल्य रहता है |मूर्ति कला को प्राचीन काल में वास्तुकला के अंतर्गत ही स्थान प्राप्त है | भारतीय मूर्तिकला के तीन प्रमुख प्रयोजन माने गये हैं –धार्मिक, स्मारक और अलंकरण|

- **वास्तुकला -** वस्तुकला के विकास का स्रोत धर्म रहा है, मूर्तिकला और चित्रकला को वास्तुकला के अंतर्गत स्थान दिया गया है| प्राचीन गुफाओं, मंदिरों आदि में तीनों कलाओं कलाएं एक साथ मिलती है |वास्तु कला का अर्थ है-उन भवनों की निर्माण कला जहाँ निवास किया जाता है| सुनियोजित नगर निवेश,पक्की ईंटों को बने सार्वजनिक एवं निजी सड़के, जल निकास की नालियाँ, सिंधु सभ्यता की वास्तुकला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं|

उपर्युक्त तीनों कलाएं दृश्य कलाएं हैं और नेत्रों का विषय है, इसलिए इन्हें दृश्य कलाएं कहा गया हैं|

प्रदर्शनकारी कलाएँ----

- **काव्य कलाएँ**-काव्य वह साधन है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है |

आचार्य भामह के अनुसार:

" शब्दार्थो सहितो काव्यम"

अर्थात शब्दों का अर्थ सहित संयोजन ही काव्य है वह कला जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है| काव्य कला में वस्तु के साथ-साथ उसका रूप भी महत्वपूर्ण होता है| काव्य में लय और छंद का भी विशेष महत्व होता है :पर रूपों के तत्वों, भाषा लय तथा कथा का संगठन और औचित्यपूर्ण और तर्कसंगत होना चाहिए|

- **संगीत कला-** गायन, वादन एंव नृत्य के सम्मिलित रूप को संगीत कहते हैं |संगीत काव्य की भांति भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है |संगीतकार भावों की व्यंजना 'नाद' के माध्यम से करता है | संगीत मानव को ही नहीं पशु-पक्षियों को भी रस विभोर कर देता है|

आज के समग्र संगीत की दो धाराएं प्रचलित है –

1शास्त्रीय संगीत एवं

2लोक संगीत तथा लोकप्रिय संगीत

गायन के क्षेत्र में तानसेन, बैजू से लेकर पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज के नाम विशिष्ट सम्माननीय है| वादन के क्षेत्र में उस्ताद अल्ला खां (तबला), रवि शंकर (सितार), बिस्मिल्लाह खां(शहनाई), हरिप्रसाद चौरसिया(बांसुरी), रामनारायण (सारंगी), लालमणि मिश्र (वीणा)आदि वादन क्षेत्र के सशक्त हस्ताक्षर है |नृत्य के क्षेत्र में उदय शंकर(बेले), गोपीकृष्ण (कत्थक), बिरजू महाराज (कत्थक), मृणालिनी साराभाई (भरतनाट्यम), केलुचरण महापात्र (ओडिसी), राजा राधा रेड्डी (कुचिपुड़ी)आदि के अग्रणी कलाकार हैं |